श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

नवम्बर २०११

वर्ष ८३ | श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर | अंक ११

www.krishnapranami.org

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर जूई (भिवानी) हरियाणामें आयोजित श्री १०८ पारायण
तथा भिवानी आश्रममें आयोजित मंगल जयन्तिके दृश्य ।

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर अमहमदावादमें परमहंस श्री रंगिलदासजी महाराजकी
स्मृतिमें आयोजित पारायणके अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए
परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि.सं : २०६८ निजानन्दाब्द : ४३० बुद्धजी शाका : ३३४

वर्ष : ८३ **नवम्बर २०११** अंक : ११

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम– खीजड़ा मन्दिर
जामनगर – ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी लक्ष्मण चैतन्य *एवं* श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/- १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : (०२८८) २६७ २८२९फेक्स (०२८८) २५५ १३५३
E-mail : navtanpuri@gmail.com /tanpuri@krishnapranami.org
website : www.krishnapranami.org /w.krishnadhamusa.org

श्री ५ नवतनपुरी धाम स्थापना दिवस

कार्तिकी पूर्णिमा श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापनाका दिन है। निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने आजसे ३८१ वर्ष पूर्व वि.सं. १६८७ कार्तिकी पूर्णिमा बुधवारके दिन श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना कर ब्रह्मात्माओंकी जागनी कार्यको आगे बढ़ाया इस दिनको श्री कृष्ण प्रणामी श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना दिवसके रूपमें भी माना जाने लगा।

सम्वत सोलह सौ सतासिया, ए कार्तिक में मजकुर ।
यहां सेती उदय भई, उदया मूल अंकुर ।।

(लालदासजी वीतक १३/२२)

श्री देवचन्द्रजी पुरी नवतन, आये यहां बसत ।
सेवा गोवर्धन करे, पहुंचा नजीक बखत क्यामता ।।

(लालदासजी वीतक १३/३८)

पाँच प्रश्न

परम पूज्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म–निजानन्द सम्प्रदायके आदि आचार्य निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजको वि.सं १६७८ भाद्र कृष्ण चतुर्दशीको जामनगरमें पूर्णब्रह्म परमात्मा अनादि अक्षरातीत श्रीकृष्णजीने दर्शन देकर तारतम ज्ञान प्रदान किया, पातालसे परमधाम पर्यन्तका अनुभव करवाया एवं ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेका दायित्व सौंपते हुए षोडशाक्षर तारतम महामन्त्र प्रदान किया। उस समय आत्मजागृतिके लिए पूछे हुए पाँच प्रश्नोंका संग्रह महामति श्री प्राणनाथजीने कलश ग्रन्थके आरंभमें किया है। वे इस प्रकार हैं,

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसमकी, द्रढ कर कहो वचन ॥
तूं जागत है के नींदमें, करके देख विचार ॥

(अर्थात्)

(१) तुम कौन हो ? (२) तुम इस जगतमें क्यों आए हो ?

(३) तुम्हारा घर कहाँ है ? (४) तुम्हारे स्वामी कौन हैं ?

(५) तुम जागृत अवस्थामें हो या नींदमें ?

वास्तवमें उक्त पाँचों प्रश्न सभी व्यक्तियोंके जीवनके साथ जुड़े हुए हैं जिनका समाधान होने पर ही जीवन सार्थक होगा।

प्रथम प्रश्न है, तुम कौन हो ?

प्रश्न जितना सरल दिखता है उतना जटिल भी है। प्रत्येक मनुष्यको अपना परिचय होना आवश्यक है। सामान्यरूपसे हमें इतनी ही जानकारी होती है कि मैं यह दृश्यमान शरीर हूँ। इसलिए मेरा नाम राम, कृष्ण, श्याम, देवदत्त आदिमेंसे एक है। वास्तवमें देखा जाय तो यह शरीर मेरा है, मैं

शरीर नहीं हूँ। जैसे मकान मेरा है मैं उससे भिन्न हूँ, मात्र मैं उसमें निवास करता हूँ। मकानको बदल भी सकते हैं। जिस प्रकार मकान शरीका आश्रय स्थान है इसी प्रकार यह शरीर भी आत्माका आश्रय स्थान है । मैं स्वयं आत्मा हूँ, थोड़े समयके लिए ही इस शरीरमें हूँ। कभी इसको छोड़ना भी पड़ सकता है। शरीरमें भी परिवर्तन हैं। कभी यह बालक था, अब जवानी आ गयी फिर वृद्धावस्था भी आएगी । शरीरके साथ तादात्म्य सम्बन्ध होनेसे मैं शरीर हूँ ऐसा आभास होता है । इसीको देहाध्यास कहा है । शरीरको ही मैं समझने वाली बुद्धि देहात्मबुद्धि कहलाती है । शारीरिक अवस्थाओंमें परिवर्तन होता है । किन्तु स्वयं(आत्मा) में परिवर्तन नहीं होता है । राम कृष्ण आदि नाम भी शरीरके जन्मके पश्चात् रखे गए हैं इसलिए ये शरीरके ही नाम हैं। शरीरके जन्मके पश्चात् उस पर संस्कार किए जाते हैं। हिन्दू रीतिके आधार पर संस्कार होनेसे हिन्दू एवं मुस्लिम रीतिसे संस्कार होनेपर मुस्लिम कहलाता है। इसी प्रकार हिन्दूओंमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्णगत संस्कार बनाए गए हैं। मनुष्यमें रहे हुए प्राकृतिक गुण पूर्वजन्ममें किए गए कर्मोंके आधार पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार कुछ संस्कार जन्म जन्मान्तरसे जुड़े हुए होते हैं तो कुछ संस्कार जन्मके पश्चात् किए जाते हैं । इन्हीं संस्कारों तक ही सीमित होनेके कारण हम स्वयंको आत्माके रूपमें न पहचान कर शरीर या उस पर किए गए संस्कारोंके आधार पर पहचानते हैं। ये सारे संस्कार लोक व्यवहारके लिए आवश्यक हैं किन्तु इनके कारण स्वयंको भूलकर देहाध्यास या देहाभिमानके कारण हम स्वयंको भिन्न–भिन्नरूपमें जानते हैं। यह हमारी अज्ञानता ही है। इस प्रकार हम स्वयंको छोटे या बड़े दायरेमें धकेल देते हैं। इसके साथ साथ मैं स्वस्थ हूँ, अस्वस्थ हूँ अथवा स्थूल हूँ या कृश हूँ जैसे कथन भी देहाध्यास ही है।

वास्तवमें समझा जाय तो मैं अस्वस्थ हूँ इस कथनमें कुछ सच्चाई है । स्वस्थका अर्थ है, स्वमें स्थित होना अर्थात् स्वयंको आत्माके रूपमें जानना एवं तदनुसार व्यवहार करना । किन्तु हम ऐसा समझते भी नहीं हैं और तदनुसार व्यवहार भी नहीं करते हैं इसलिए हम अस्वस्थ अवश्य हैं।

अस्वस्थका तात्पर्य है, स्वयंकी पहचान न होना। हमें स्वयंकी पहचान नहीं है इसलिए हम वास्तवमें अस्वस्थ हैं।

अस्वस्थ व्यक्ति कोई कार्य ढंगसे नहीं कर सकता है। वह शरीरसे भी शिथिल होता है और मनसे भी। उसकी मानसिक स्थिति भी असंतुलित रहती है। अतः एव वह चिन्ताओंसे घिरा हुआ सदैव अशान्तिका अनुभव करता है। आज हमारी यही स्थिति है। हमारा मन विचलित है। हमें चिन्ता सता रही है। परिवार धनसम्पत्ति, मान प्रतिष्ठा आदिकी चिन्ता हमें छोड़ती नहीं है फिर भी हम यह करेंगे वह करेंगे ऐसा सोच कर सदैव कामनाओंको पोषते रहते हैं। इससे हमारी तृष्णा बढ़ती रहती है और हम दरिद्र बनते रहते हैं। कहा भी है, **'स हि भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला'।**

जब तक हम स्वयंको ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि वर्णोंमें ही सीमित रखते हैं तथा हिन्दू मुस्लिमादि रीतिसे किए जाने वाले संस्कारोंमें ही सीमित रखते हैं या इनसे ऊपर उठे हुए कहकर तथाकथित मानवतावादी बनने लगते हैं तब तक हम यथार्थतः अस्वस्थ ही हैं। यह तो मात्र व्यावहारिक पहचान है। भौतिक व्यवहारके लिए इस प्रकारकी पहचान बनाई गई है। लोक व्यवहारके लिए यह अति आवश्यक भी है किन्तु यथार्थतः हमें इस प्रकारकी ही पहचान होना हमारी अज्ञानता ही कहलायेगी तब तक देहाध्यास ही बना रहेगा। जब तक देहाध्यास रहेगा तब तक हम अस्वस्थ रहेंगे।

आवश्यकता है हमें स्वस्थ होने की। स्वयंको मात्र शरीर समझना छोड़कर आत्मा मानने लगेंगे तभी हम स्वस्थ होंगे। शरीर स्वयं ही रोग व्याधियोंसे ग्रस्त रहता है। कहा भी है, **'शरीरं व्याधिमन्दिरम्', 'शीर्यते तत् शरीरम्'** अर्थात् यह रोगव्याधियोंका घर है और दिनप्रतिदिन जीर्णशीर्ण होता रहता है। ये सभी परिवर्तन शरीरके हैं। आत्मा इन सभी परिवर्तनोंसे भिन्न है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है। उसे सच्चिदानन्दस्वरूपमें ही समझना होगा। इसीको यथार्थ ज्ञान कहा है। तभी हम स्वस्थ होंगे। अपना स्वरूप ही सच्चिदानन्द स्वरूप है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन मात्र

शरीरमें है। किन्तु ये सभी परिवर्तन आत्मा पर आधारित हैं। शरीरमें आत्माके होने पर ही ये परिवर्तन संभव हैं। जन्म मृत्यु भी शरीरका धर्म है। प्रतिक्षण मृत्यु हो रही है। परिवर्तनका अन्तिम चरण ही मृत्यु है। जैसे पानीमें बुलबुले पैदा होते हैं, थोड़े क्षण दिखाई देते हैं फिर फूट जाते हैं। इसी प्रकार यह शरीर भी देखते देखते ही मिट जाएगा यह तो जन्म मृत्युके चक्रमें चल रहा है। राग–द्वेष, मानापमान, सुख–दुःख, ये सारे विकार शरीरधर्मा हैं। आत्मा इन विकारोंसे रहित है, सर्वथा निःद्वन्द्व है। यह नित्य है, सनातन है। कभी भी इसका अभाव नहीं है।

हमें इस आत्माको पहचानना है। इतना ही नहीं स्वयंको आत्माके रूपमें पहचानना है। मात्र जाननेसे भी नहीं होगा। '**स्वयंको जानो**' इतना पर्याप्त नहीं है, स्वयंकी पहचान होनी चाहिए। इसीलिए महामति श्री प्राणनाथजीने कहा, '**पहले आप पहचानो**', अर्थात् सर्वप्रथम स्वयंको पहचानो। स्वयंकी पहचान होने पर परमात्माकी भी पहचान होगी। उनके साथ हमारा शाश्वत् सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध सृष्टिसे पूर्वमें भी था, वर्तमानमें भी है और सृष्टिके लय होने पर भी रहेगा। यह सनातन सम्बन्ध है। इस सनातन सिद्धान्तको समझानेके लिए ही धर्मका उपदेश हुआ है।

तुम आत्मा हो शरीर नहीं। तुम सच्चिदानन्द स्वरूप हो, असत्य, जड़ एवं दुःखरूप नहीं। परमात्माका जो स्वरूप है वही तुम्हारा स्वरूप है '**तत्त्वमसि**'। अब स्वस्थ बनो, स्वयंको पहचानो और अनुभव करो कि परमात्माका जो स्वरूप है वही मेरा स्वरूप है '**अहं ब्रह्मास्मि**'। इन वैदिक वचनोंको जानना मात्र पर्याप्त नहीं है अपितु इनका बोध होना आवश्यक है।

श्री कृष्णजीने श्रीदेवचन्द्रजी महाराजको पूछा कि तुम कौन हो ? इसका तात्पर्य है कि परमात्मा उनको स्व(आत्मा)का अनुभव करवाना चाहते थे। वास्तवमें आत्माका अनुभव होने पर ही सबकुछ समझा जा सकता है। यह बहुत बड़ी बात है, यह जीवनका रहस्य है इसे सामान्य न समझें। श्री कृष्णजी श्री देवचन्द्रजीको कह रहे हैं, तुम स्वयंको आत्माके रूपमें पहचानो। इस प्रकार हमें भी स्वयंको आत्माके रूपमें पहचानना होगा।

दूसरा प्रश्न है, तुम इस जगतमें क्यों आए हो ?

आत्माएँ संसारमें क्यों आती हैं ? इसे जाननेसे पूर्व यह जानना आवश्यक है कि यह संसार क्या है ? वैसे तो संसारको नाशवान्, क्षणभंगुर, अशाश्वत्, जड़ दुःखमय तथा स्वप्नवत् कहा जाता है। वास्तवमें संसार है भी ऐसा ही। जैसे सोया हुआ मनुष्य नींदमें स्वप्न देखता है तो एक नये संसारकी कल्पना करता है। यह स्वप्नका संसार कल्पनाका ही होता है। मात्र १० मिनटके स्वप्नमें पूरी जिन्दगी व्यतीत होती है। इसी प्रकार यह दृश्यमय संसार भी अक्षरब्रह्मका स्वप्न है। मनुष्यके १० मिनटके स्वप्नमें पूरी जिन्दगी व्यतीत हो सकती है तो अक्षरब्रह्मके स्वप्नमें क्षणमात्रमें करोड़ों ब्रह्माण्डोंकी उत्पत्ति तथा लय हो जाता है। संसारकी सृष्टि, स्थिति एवं लयके मुख्य कारण अक्षरब्रह्म हैं। कहा भी है, **तथाऽक्षरात् संभवतीह विश्वम्**। (मुण्डक)

अक्षरब्रह्म स्वाभाविक रूपसे ऐसे खेल बनाते हैं, और मिटाते हैं। जिनमें चेतनाओंका आना-जाना बनता है। चेतन एवं अर्धचेतन सभी प्राणियोंके लिए कर्मका विधान बनाया गया है। इस सृष्टिचक्रमें खेलके विभिन्न पात्र हैं जिनमें मुख्यतः खेलनेवाले एवं देखनेवाले दो प्रकारके जीव हैं। खेलके पात्र जीव कर्मानुसार जन्म और मृत्युके चक्रमें घूमते रहते हैं। उनमेंसे कोई कोई ही मुक्त हो सकते हैं। दूसरे जीव हैं वे मात्र द्रष्टा बनकर रहते हैं। श्वेताश्वतर उपनिषदमें इस रहस्यको इस प्रकार स्पष्ट किया है,

द्वा सुपर्णा सयुजौ सखायौ, समाने वृक्षे परिषस्वजाते ।
तयोरेकं पिप्पलं स्वादुमत्ति अनश्नन्न्योऽभिचाकषीति ॥

अर्थात् एक वृक्ष पर दो पक्षी रहते हैं उनमेंसे एक उसके फलोंका आस्वादन करता है तो दूसरा मात्र देखता रहता है। महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं, शरीररूपी वृक्ष पर दो प्रकारकी चेतनायें आश्रय ले रही हैं। उनमें एक सांसारिक कर्मफलका आस्वादन करती है तो दूसरी मात्र देखती रहती है। किन्तु माया, मोह एवं अहंकारके कारण सामान्य लोगोंको उनकी पहचान नहीं होती है। यथा,

यामें जीव दोय भांतके, एक खेले दूजे देखन हार ।

पेहेचान न होवे काहूंको, आडी पडी माया मोह अहंकार ॥

कर्मफलका आस्वादन करनेवाली चेतना सामान्य जीव हैं जो नश्वर जगतके खेलके मुख्यपात्र हैं । कर्मके अनुसार इनकी गति होगी । यह सम्पूर्ण सृष्टिचक्र, चौरासी लाख योनियाँ इन पर ही आधारित हैं । उत्कृष्ट कर्म करने पर इनको ऊर्ध्वलोक प्राप्त होते हैं । अपने कर्मोंके आधार पर वे स्वर्ग वैकुण्ठ आदि लोकोंका सुख भोग सकते हैं ।

द्रष्टा चेतना ब्रह्मात्मा तथा ईश्वरीय आत्माएँ होती हैं । इनमें भी ईश्वरी सृष्टि ब्रह्मात्माओंको सहयोग पहुँचानेके लिए हैं । ब्रह्मात्माओंका सम्बन्ध परमधामसे है और ईश्वरीय सृष्टिका सम्बन्ध अक्षरधामसे है । सामान्य जीव भी ब्रह्मात्माओंके संसर्गमें ओनेपर उनकी कृपासे अखण्ड मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं ।

यद्यपि ब्रह्मात्मायें नश्वर जगतका खेल देखनेके लिए आई हैं किन्तु संसारके माया, मोह, एवं अहंकारके प्रभावके कारण इसे देखती हुई स्वयंको ही भूल गई । जिस प्रकार जादूगरका खेल देखता हुआ मनुष्य स्वयंके अस्तित्त्वको ही भूल जाता है और जादूगर जैसे नचाता है वैसे ही नाचने लगता है । इसी प्रकार ब्रह्मात्माएँ भी मायाके प्रभावमें आकर परवश हो गई हैं । उन्हें यह समझाना आवश्यक है कि तुम नश्वर जगतका खेल देखनेके लिए आयी हो । द्रष्टा बनकर इसको मात्र देखना है । इसमें भूलना नहीं है । जेसे ही उन्हें अपनी पहचान होगी और अपने आगमनका कारण ज्ञात होगा तव वे राग–द्वेष एवं कर्ता–भोक्तापनसे रहित होकर अपने प्रियतम धनी श्रीराजजीके प्रेममें मस्त हो जायेंगी । ऐसी आत्माओंके लिए कहा गया है,

ओ खेले प्रेमें पार पियासों, देखनको तन सागर माहिं ।

ब्रह्मात्माओंको अपने आगमनका कारण ज्ञात होना चाहिए तभी वे अपने धनी और धामके प्रति उन्मुख होगा इसीलिए श्रीकृष्णजीने श्री देवचन्द्रजीको उनके आगमनका कारण पूछा । हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपने आगमनका कारण जाननेका प्रयत्न करें । यह दूसरा प्रश्न हमें यही समझाता है ।

तीसरा और चौथा प्रश्न एक दूसरेके आश्रित होनेसे दोनोंकी चर्चा एक साथ करते हैं ।

यथा,

तुम्हारा घर कहाँ है और तुम्हारे स्वामी कौन है ?

आत्मा और परमात्माका सजातीय सम्बन्ध है। आत्मा परमात्माका ही अंश या अंग है। जैसे परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप हैं वैसे ही आत्मा भी सच्चिदानन्द स्वरूप है । किन्तु परमात्मा सर्वज्ञ हैं जबकि आत्मा सर्वज्ञ नहीं है। जिस प्रकार समुद्रके एक बूंद जलमें समुद्रके ही गुण होते हैं किन्तु वह बूंद समुद्र नहीं हो सकती है। समुद्र रत्नाकर है किन्तु एक बूंदसे कोई रत्न प्राप्त नहीं होगा। समुद्रमें जहाज चलते हैं किन्तु एक बूंदमें ऐसा कुछ भी संभव नहीं है । क्योंकि वह अंश मात्र है । इसी प्रकार आत्मा भी अंशमात्र है। किन्तु यह निश्चित है कि आत्माका घर वही होगा जो परमात्माका है । परमात्माका घर परमधाम है इसलिए आत्माका घर भी परमधाम ही है ।

सभी शास्त्र तथा मनीषियोंने परमात्मा एक हैं ऐसा कहा है। वेदोंने कहा है, **'एकमेवाद्वितीयम्'** अर्थात् परमात्मा एक हैं और अद्वितीय हैं । उनके समान दूसरा कोई नहीं है। श्री प्राणनाथजी भी कहते हैं, **'पार पुरुष तो पिया एक है'** **'सबका खाबिन्द एक'** आदि आदि। एक ही परमात्माको स्थानगत या भाषागत भेदके कारण अलग अलग नामोंसे पुकारा गया है। इस पर श्री प्राणनाथजी कहते हैं,

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेष अनेक ।
जिन कोई झगड़ो आपमें, धनी सबोंका एक ।।

एक ही परमात्माको भिन्न भिन्न नामोंसे पुकारा गया है और परमात्माको माननेवाले भी भिन्न भिन्न वेशभूषा धारण करते हैं और अपनी मान्यताओंके आधार पर परस्पर लड़ाई–झगड़े भी करते हैं। वास्तवमें देखा जाय तो किसीको भी झगड़ा करनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि सबके स्वामी पूर्णब्रह्म परमात्मा एक हैं ।

उन्हीं परमात्माको श्रीमद्‌भगवद्‌गीताने **उत्तम पुरुष** कहा है, श्रीमद्‌भागवतमें **परम सत्य** एवं उपनिषदोंमें **अक्षरात्परतः परः'** अर्थात् अक्षरसे भी परे **अक्षरातीत** कहा हैं। वे विश्व ब्रह्माण्डके स्वामी हैं। विभिन्न शास्त्रोंमें उनको श्रीकृष्ण नामसे पुकारा गया है। यथा, **ईश्वरः परमः कृष्ण सच्चिदानन्द विग्रहः**। (ब्रह्मसंहिता) विश्वब्रह्माण्डके नियन्ता अक्षर ब्रह्मके भी स्वामी होनेसे वे विश्व ब्रह्माण्डके एकमात्र स्वामी हैं. **'एको विश्वस्य भुवनस्य राजा'**। इसीलिए श्रीकृष्ण प्रणामी धर्ममें उनको **'श्रीराज'** अथवा **श्रीराजजी** कहा है।

अक्षरातीत परमात्मा सर्वशक्ति सम्पन्न एवं स्वयंप्रकाश हैं। वे सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। उनके सदंश अक्षर ब्रह्म हैं। उनका ही अंग होनेसे अक्षरब्रह्म भी परब्रह्मसे भिन्न नहीं हैं किन्तु वे ब्रह्माण्डोंका सर्जन एवं लय करते रहते हैं। इसीलिए उनकी लीलाको बाल लीला कहा गया है। यद्यपि पूर्णब्रह्म परमात्मा ही सर्वोपरि हैं तथापि ब्रह्माण्डोंकी सृष्टि, स्थिति एवं लयका दायित्व अक्षरब्रह्म पर होनेसे उनका भी महत्त्व बहुत बड़ा है। ऋग्वेदमें कहा है,

एतावानस्य महिमा अतो ज्यायांश्चपुरुषः ।

अक्षरब्रह्मकी महिमा भी इतनी बड़ी है तो परब्रह्मके विषयमें तो कहना ही क्या ? इसीलिए शास्त्रोंमें परब्रह्मके विषयमें विशेष चर्चा ही नहीं हुई है। श्रीमद्‌भगवद्‌गातीमें कहा है,

द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि, कुटस्थोऽक्षर उच्यते ॥

इस जगतमें क्षर और अक्षर इस प्रकार दो पुरुष प्रसिद्ध हैं। उनमें **'क्षरः सर्वाणि भूतानि'** अर्थात् सम्पूर्ण पाञ्चभौतिक पदार्थोंके अधिष्ठाता क्षरपुरुष कहलाते हैं। तात्पर्य यह है कि सामान्य देवी-देवताओंसे लेकर विभिन्न अवतार, ब्रह्मा, विष्णु, महेशसे लेकर भगवान नारायण पर्यन्त सम्पूर्ण शक्तियाँ क्षर जगतकी ही अधिष्ठात्री हैं। इसलिए उनको क्षर कहा है।

मुख्यरूपमें भगवान नारायण क्षरपुरुष हैं। वे ही ब्रह्मा, विष्णु एवं महेशके रूपमें व्यक्त होकर इस ब्रह्माण्डके प्राणियोंकी सृष्टि, स्थिति और लय करते हैं। सम्पूर्ण देवी-देवतायें इन्हीं कार्योंके सहयोगके लिए हैं। यह तो एक ब्रह्माण्डकी बात हुई। ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड हैं जिनकी सृष्टि, स्थिति और लय स्वयं अक्षर ब्रह्म करते हैं। उनको कूटस्थ कहा है। क्योंकि सभी ब्रह्माण्डोंके मूलमें वे ही हैं। इसलिए इस जगतमें दो पुरुष- क्षर पुरुष (भगवान नारायण एवं उनके अंश ब्रह्मा विष्णु महेश तथा देवी देवताएँ) एवं अक्षर पुरुष (अक्षर ब्रह्म) प्रसिद्ध हैं। पूर्णब्रह्म परमात्मा उनसे भिन्न हैं। उनके लिए कहा है,

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।

उत्तम पुरुष तो क्षर एवं अक्षर इन दोनोंसे भिन्न हैं उनको परमात्मा कहा है। वास्तवमें विश्वब्रह्माण्डके स्वामी वे ही हैं। उनके अंग अक्षर एवं अक्षरके स्वप्नके स्वरूप भगवान नारायण और भगवान नारायणकी शक्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा विभिन्न देवी देवतायें, सभीके स्वामी एक ही परमात्मा हैं। वे सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, अक्षरातीत हैं और शाश्वत हैं। उनका धाम परमधाम भी शाश्वत् है। वह भी अक्षरातीत है और सच्चिदानन्दमय है। उनके प्रेमका स्वरूप श्री श्यामाजी हैं। उनको आनंद अंग कहा है और श्री श्यामाजीके अंग स्वरूप ब्रह्मात्मायें हैं। इस प्रकार सभी आत्मायें मूलतः अक्षरातीतकी ही अंगभूता हैं। पूर्णब्रह्म परमात्माके साथ उनका अभेद सम्बन्ध है। वे भी सच्चिदानन्द हैं। उनका धाम भी सच्चिदानन्दमय परमधाम है।

अक्षरातीत परमात्माने अपनी आत्माओंको नश्वर जगतका खेल दिखाया। इसलिए खेल देखती हुई आत्मायें स्वयंको अपने स्वामी परमत्माको एवं अपने घर परमधामको भूल गई। यद्यपि वे अपनी घरकी खोज करती हैं किन्तु अज्ञानताके कारण उन्हें स्वर्ग, वैकुण्ठ आदि स्थान अपने घर जैसे लगने लगते हैं और वे उनकी प्राप्तिके लिए लौकिक साधनायें करने लग

जाती हैं । उनको जागृत कर परमधामका अनुभव करवानेके लिए तारतम ज्ञान हैं । इस ज्ञानको हृदयंगम कर जैसे ही वे जागृत हो जायेंगी तब उन्हें पता चलेगा कि अपने स्वामी अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं और अपना घर परमधाम है ।

अपने धनी श्री श्यामा श्याम, अपना वासा है निज धाम ॥

अपने धनी और धामकी अनुभूतिके लिए जागृत होने की आवश्यकता है । हमें जागृत करनेके लिए निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराज जागृत बुद्धिका ज्ञान तारतम ज्ञान लेकर इस भूतल पर पधारे हैं ।

सो बुद्धजी बुद्ध जागृत ले, प्रगटे पुरी नवतन ।

सर्व प्रथम श्री कृष्णजीने प्रकट होकर उन्हें यह ज्ञान प्रदान किया । महामति श्री प्राणनाथजीने इसी ज्ञानको चारों और फैलाया जिसके परिणाम स्वरूप आज हम भी इसे प्राप्त कर सके । अब हमें निश्चित रूपसे यह ज्ञान होना चाहिए कि अपने स्वामी पूर्णब्रह्म परमात्मा अनादि अक्षरातीत हैं और हमारा मूलघर परमधाम है ।

अन्तिम प्रश्न है,

तूं जागत है के नींदमें, करके देख विचार ।

अर्थात् तुम जागृत अवस्थामें हो या नींदमें ? विचार पूर्वक देखो । किसी व्यक्तिको ऐसा प्रश्न पूछा जाय या कोई हमें पूछने लगे कि तुम जागृत हो या नींदमें ? तो हम सामान्यतः यही कहेंगे कि अभी हम जागृत अवस्थामें हैं । सामान्यतया हम सो कर नींदग्रस्त हैं या नहीं, यह ऐसा प्रश्न नहीं है । हम जिसे सोना कहते हैं उसमें इन्द्रियाँ एवं मन सोते हैं । इन्द्रियोंके साथ मन भी सोकर स्तब्ध हो जाता है तो उसे सुषुप्तावस्था कहा जाता है । इन्द्रियाँ सो रही हो और मन जागृत हो जाय तो वह कल्पनामय जगतमें विचरण करने लग जाता है । उसे स्वप्नावस्था कहा जाता है । जब मनके साथ इन्द्रियाँ भी जागृत हो जाती हैं तब व्यक्ति जागृत अवस्थामें होता है । यह तो सामान्य नींद और सामान्य जागृतिकी बात हुई । यहाँ पर श्रीकृष्णजी पूछ रहे हैं वह आत्माके लिए है ।

आत्मा जागृत है या सो रही है इसे आँखसे देखा नहीं जा सकता है। यह तो अनुभूतिका विषय है। अनुभूति अन्तर्दृष्टिके खुल जाने पर ही होती है। इसके लिए मनन चिन्तन करना पड़ता है। इसीलिए श्रीकृष्णजीने कहा, करके देख विचार अर्थात् तुम विचार करो, चिन्तन करो।

वैसे देखा जाय तो उपर्युक्त चार प्रश्नों पर विचार कर लिया जाय तो ज्ञात होगा कि हम जागृत हैं या नींदमें हैं।

सामान्य मनुष्य नींदमें-से जागृत होते हैं जबकि महापुरुषोंकी आत्म जागृत होती है। सामान्य लोग संसारके विषयोंकी ओर जागृत होते हैं, उन्हें आत्माका ख्याल नहीं होता है परन्तु महापुरुषोंकी आत्मा जागृत होती है। वे नश्वर जगतको स्वप्नवत् समझते हैं। जो व्यक्ति जिसमें जागृत होते हैं उनका उसीमें चिन्तन होता है। इसलिए सामान्य मनुष्य सांसारिक विषयोंका चिन्तन करते हैं और भौतिक सुख-दुःखोंमें रचे पचे रहते हैं। परन्तु महापुरुष आत्माका चिन्तन करते हैं और परमात्माके प्रेममें मस्त रहते हैं। वे सांसारिक दुःख सुखोंसे न दुःखी होते हैं और न ही सुखी। यदि सामान्य व्यक्ति भी उपर्युक्त चारों प्रश्नों पर विचार करेंगे और तदनुसार व्यवहार करने लगेंगे तो उनकी भी आत्मा जागृत हो जायेगी।

यहाँ पर श्रीकृष्णजी कहते हैं, विचारपूर्वक देखो कि तुम स्वयं जागृत हो या नहीं ? यदि हमें उपर्युक्त चारों प्रश्नोंका उत्तर ख्याल है और हम तदनुसार व्यवहार करने लगते हैं तो हम अवश्य जागृत हैं अर्थात् हमारी आत्मा जागृत है, अन्यथा हम नींदमें हैं।

उपर्युक्त प्रश्नोंमें प्रथम है आत्माकी पहचान। यदि हमें स्वयंकी पहचान हो तो हमें यह जगत स्वप्नवत् तथा नाशवान् लगने लगेगा। ऐसा अनुभव होगा कि संसार परिवर्तनशील है और यह शरीर भी परिवर्तनशील है परन्तु मैं स्वयं अपरिवर्तनशील अविनाशी आत्मा हूँ। यह संसार शरीरके लिए है। शरीरकी भाँति यह भी नाशवान् है। जब शरीर ही नाशवान् है तो उसका घर यह संसार भी नाशवान है। इसी प्रकार आत्मा अविनाशी है तो

अत्माका घर भी अविनाशी है। मैं स्वयं अविनाशी आत्मा हूँ तो मेरा घर भी अविनाशी है। मैं स्वयं आत्मा हूँ तो मेरा घर भी अविनाशी धाम है। इस प्रकार असत्यसे सत्यकी ओर, अन्धकारसे प्रकाशकी ओर एवं मृत्युसे अमरत्वकी ओर जाना चाहिए। सच्चिदानन्द परमात्माका अंश आत्मा भी सच्चिदानन्द है और उसका घर भी सच्चिदानन्दमय परमधाम है। इस प्रकार जो कुछ भी है वह परमात्मासे ही ओतप्रोत है। इसीलिए वेदोंमें '**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**' कहा है। सारी सृष्टि एवं सारी चेतनाएँ मूलतः परमात्मामें ही आधारित हैं। किसीका परमात्माके साथ सीधा सम्बन्ध है तो किसीका अक्षरब्रह्म तथा भगवान नारायण आदिके माध्यमसे है। ब्रह्मात्माओंका सीधा सम्बन्ध अक्षरातीत परमात्माके साथमें है। वे जागृत होकर इसका अनुभव कर सकती हैं। इसीलिए श्रीकृष्णजी श्री देवचन्द्रजीको पूछ रहे हैं, तुम जागृत हो या नहीं ? यें पाँचों प्रश्न आत्मजागृतिके लिए हैं। श्रीकृष्णजी इनके द्वारा श्रीदेवचन्द्रजीकी आत्माको जागृत कर रहे हैं। इसलिए हमें इनपर विचार कर जागृत होना है और जागृत होकर अपने निजसुखका अनुभव करना है। जागृत होने पर नश्वर तन धारण करते हुए भी हम परमधामका अनुभव कर सकेंगे।

इत ही बैठे घर जागे धाम, पूरण मनोरथ हुए सब काम।
धनी महामत हंस ताली दे, साथ उठा सब हंसता सुख ले ॥

● अब तो लाभ लीजिए ●

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाको online पढ़नेके लिए
www.krishnapranami.org
श्री तारतम सागर मूल तथा अर्थके साथ online पढ़ने के लिए
www.shritartamsagar.org
श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकामें लेख आदि भेजनेके लिए
E-mail : navtanpuri@gmail.com

प्रणाम

प्रकाशानन्दजी महाराज -श्रीराजधाम जैताना (राजस्थान)

१. प्रणाम: जीवनकी आस्था

प्रणाम शब्द जीवन प्रभातकी प्रथम मुस्कान, प्रथम पुष्प, प्रथम शिष्टाचार या अभिवादन, भारतीय संस्कृतिका प्राण एवं मानव सभ्यताकी आत्मा है। प्रणामी सृष्टिका प्रथम श्रेष्ठतम समर्पित एवं प्रामाणिक साधक है। 'प्रणाम' एक अद्भुत आकर्षण शक्ति है। हर दिलका मधुर व पावन सम्बन्ध एवं अपनापन प्रणामसे ही सम्भव है। सच तो यह है कि प्रणाम एक मुस्कराते-गुन-गुनाते-झूमते-नाचते अल्हड़ एवं निर्दोष दिल एवं मासूम हृदयका बुलन्द हौसला व सद्भावनामय थिरकते चित्तकी आह्लादकारी सद्वृत्ति है, जिसमें आदर स्वागत, आत्म-सन्मान, समर्पण एवं आत्म-मिलनकी तीव्र आतुरता, उमंग व उल्लास है।

मिलनकी प्रसन्नता एवं विदाईकी दुःखद घड़ी पर प्रणाम शब्द ही आत्म-पीड़ा एवं बिलखते दिलकी वेदनासे आँखोंमें छलकता हुआ टपकने वाला आँसू है। आत्मीयताके भाव-आवेगमें मौन स्वीकृति एवं निस्तब्धता भी प्रणाम ही है। यह हृदय-वीणा है, जिस पर मानव जीवनका मन-मोहक संगीत लह-लहाता है। प्रणाम यह एक जीवन-प्रवाह है जो बहता ही रहता है। चुपचाप बहने वाला अद्भुत व विलक्षण प्रवाह जीवन वृक्षकी तरह शायद अंकुरित होता है, फूलकी तरह खिलता है, चन्दनकी तरह सुगन्ध बिखेरता है, माखनकी तरह मुलायम रहता है और ओसकी तरह शीतल होता है। जीवन वसंतकी बहार लेकर धरती पर आगमनकी प्रथम साँस एवं जीवन विसर्जनका अंतिम साँस प्रणाम है। यही हमारे दैनिक जीवनके सुख व दुःखका भागीदार तथा मानव जीवनकी आस्था है।

२. प्रणाम: भाव का मन्दिर

प्रणाम शब्द, जगमगाते दिल, चमचमाती धड़कन, मस्तीभरी खिलती

हुई जवानीके नशेकी तरह मानव मात्रका एक सहारा है जो कभी नहीं छूटता जब तक जीवन व आत्मा-प्रवाह चालू रहता है । प्रणामसे ही अखिल ब्रह्माण्डमें प्रेम, बन्धुत्व, एकात्म-भावका परचम लहराया जा सकता है । प्रणाम, विकास एवं उन्नतिका मूल द्वार है । वह दिलके विशुद्ध भावका मन्दिर है जहाँ सभी लोग सिर झुकाते हैं । देवता किसी मिट्टी, काष्ठ, सोना, चाँदी, ताँबे, पीतल आदि धातुओंकी प्रतिमा और पत्थरकी शिलामें नहीं रहते, वे तो प्राणीके दिल एवं हृदयके पवित्र भावमें विराजमान हैं । विनम्रता पूर्वक प्रणाम करनेसे मनमें सद्भावना जागृत हो जाती है । प्रणाम एवं सद्भावना देवताओंको भी प्रिय है,

न काष्ठे विद्यते देवो न शिलायां कदाचन ।
भावे ही विद्यते देवस्तस्माद्भावं समाचरेत् ॥

(गरुड़ पुराण २/३८/३)

३. प्रणामः दिलका रिश्ता

जीवन प्रभातके स्नेह यात्रामें प्रणाम शायद खूनका रिश्ता तो नहीं हो सकता परन्तु इतना तो हम जरूर सोच सकते हैं, विचार कर सकते हैं तथा कह सकते हैं कि यह अवश्यमेव दिलसे दिलका रिश्ता है, एक दिलीका रिश्ता है, दिलसे दिलको जोड़नेका अचूक रिश्ता है, अन्तर्मनके भाव-जगत्का अत्यन्त सूक्ष्म व असीम रिश्ता है, आत्मीयताका पावन व स्नेह भरा रिश्ता है । प्रणाम करना सबसे स्नेह भाव रखना, जीवनमें सत्यं, शिवं, सुन्दरम् (**The Truth, The Good, The Beauty**) का सृजन करना है । प्रणाम भारतीय मानस(प्रणामी प्रज्ञा)का चमत्कारिक आविष्कार है । इसमें सहज व आश्चर्य जनक तरीकेसे विश्व-व्यापक चेतनाको अपने आपमें जोड़ने, समष्टिगत चेतनाको अपना बनाकर ममता-स्नेह-प्यार व वात्सल्यकी धारा बहाने तथा '' **वसुधैव कुटुम्बकम्** '' की मंगलमय सर्वोच्च भावनाको चरितार्थ करनेकी अद्भुत व मौलिक क्षमता है । प्रणाम, वस्तुतः प्रणामी-प्रज्ञाकी अभूतपूर्व संकल्पना है । यही वास्तविक जीवन अर्थात् आत्माका चिन्मय रिश्ता है । एक दूसरोंको प्रणाम करनेपर हमें हर नया

पल, नया उमंग, नया जीवन, नई-नई बहारोंका अनुभव होता है । जन्म-जन्मान्तरसे प्रताड़ित एवं निर्दोष टूटते हुए दिल, तड़पते हुए दिल, तनाव व आतंककी ज्वालासे झुलसते हुए दिल, किंकर्तव्यविमूढ अन्धकारमें भटकते हुए दिलोंमें ममताका लेप लगाकर ढाढ़स बाँधने, उन सभी दिलोंमें नई शक्ति संचार व नई उमंग भरकर सावचेत करनेका अविकल्प साधन प्रणाम ही है । यही हमारा वास्तविक जीवन है । यही जीवन दर्शन है । यही जीवनका अनन्त प्रवाह है जो बहता ही रहता है, बहता ही रहता है, बहता ही रहता है, जब तक अंतिम लक्ष्य ब्रह्मानन्द रसामृत अक्षरातीत धामधनी श्री कृष्णके दिलमें समा नहीं जाता क्योंकि यह दिलका रिश्ता है । जो सर्वदा पूर्ण है, सच्चिदानन्दमय है, अजर, अमर, अविनाशी है, अनंत आत्माका मूल लक्ष्य मूल मिलावामें सदा अचल है ।

४. प्रणाम: जीवन शिल्प

'प्रणाम' मानव जीवनका नैतिक आधार है । इस महामूल्य जीवन शिल्पके बिना, जीवन शून्य हो जाता है । प्रणाम ही जीवनकी आभा है, इससे ही हमारा जीवन हरा-भरा रहता है । प्रणाम ही सजीव शरीरमें भाववर्धक जीवन रसायनकी वह प्रक्रिया है जिसके प्रयोगसे मानव पूर्ण मानव (प्रणामी) बनता है । प्रणामके बिना जीना क्या जीना है ? प्रणामके बिना जीवन एक ब्रेक रहित गाड़ीकी तरह है । शील नैतिक आचरण मनकी स्थायी वृत्ति व स्वभाव कहलाता है । इस महामूल्य नैतिक आचरण व व्यवहारकी शुरुआत, प्रणामसे होती है । इस जीवन शिल्पके अभावमें, मात्र शिक्षा, उपदेश एवं ज्ञानका भी कोई महत्त्व नहीं होता है,

शील बिना आदर्श श्रेष्ठता, तार बिना झनकार नहीं ।
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी, यदि नैतिक आधार नहीं ॥

जिस परमात्माने हमें मानव तन देकर इस धरतीकी शोभा बढ़ाई है, यह अद्‌भुत है, एक विलक्षण कार्य है । अत: हमारा भी यह फर्ज बनता है कि हम भी उस मालिकको याद करें क्योंकि जीवनके पतझड़से बाहर

निकलनेके लिए तथा परमात्माकी झलक पानेके लिए ही यह जीवन हमें मिला हुआ है। इस मानव जीवनसे ही अतुलनीय खजाना अर्थात् अखण्ड खजाना-परमात्माकी प्राप्ति होती है। इसको वृथा गँवाना कतई शोभा नहीं देता। आशा है हम अपनी-अपनी समझदारीसे सामाजिक प्राणीके रूपमें अपने-अपने दायित्त्वको निभाएँ तथा समाजकी भलाई एवं उत्कर्षके लिए प्रणाममय व्यवहार बनाएँ तथा मानसिक विकारसे बचें। सनातन परब्रह्म परमात्माका सतत चिन्तन करें।

अखण्डमण्डलाकारं कोटिसूर्यसमप्रभम्।
सिंहासने समासीनं, ध्याये ब्रह्म सनातनम्॥

५. प्रणाममें प्रचंड आकर्षण शक्ति

प्रणाम शब्दमें चुम्बकीय आकर्षण है। इसमें मानव जीवन-व्यवहारकी धारावाहिक प्रचंड आकर्षण शक्ति है। हर दिलमें समरसता घोलने वाला, दिलसे दिलको जोड़ने वाला, हर धड़कनकी शक्ति तोलने वाला, विषय-विकारको छोलने वाला, दिलका दरवाजा खोलने वाला, प्रेम-मर्यादाकी भाषा बोलने वाला-यह प्रणाम शब्द, भारतीय मानसका आश्चर्यजनक आविष्कार है। मानव जीवनके स्वर्ण काल(बाल्यकाल)से वृद्धावस्थाकी सिन्दूरी सन्ध्याके विराम काल तक साथ देने वाला जन्म-जन्मान्तरका साथी-'प्रणाम' अदृश्य आत्म-शक्तिका विस्मयकारी रहस्य है। यहाँ सवाल उठता है कि-क्या प्रणामरूपी भावनात्मक उपकरणको त्याग कर हम सभी शिक्षित कहलाएँगे ? सौन्दर्यहीन, शिष्टाचार भ्रष्ट, मान-मर्यादा हीन निर्बल जीवन जीनेमें हमें आनन्द आएगा ? यह प्रश्न सबके दिलको कुरेदता है। यह सोचनेकी बात है। वाचक वृन्द ! यह कोई कलम-घिस्सूका सवाल नहीं है यह तो भारतीय सांस्कृतिक संस्कार मंचका सवाल है।

संस्कार एवं शिष्टाचार युक्त जीवन, खिलती कलीकी तरह आनन्दकी बहार लेकर आता है परन्तु कृत्रिम जीवन अल्प समयमें ही मुरझाए हुए फूलकी तरह नष्ट हो जाता है। पाश्चात्य संस्कारकी चमक-दमकमें कोई दम नहीं है, जो शक्ति भारतीय संस्कृतिके संस्कारमें है। यहाँका संस्कार ही

जीवनमें आकर्षणका केन्द्र है। यहाँके संस्कारमें कल्याणमय माधुर्य जीवनकी आह्लादकारी आभा है । इसीलिए भारतका संस्कार एवं यहाँकी संस्कृति विश्व मानवताके लिए स्वाभिमानकारक है ।

माता-पिता या गुरुदेव जब खड़े पाँव जमीन पर हों तो उस समय यदि हम उनके श्री चरणोंमें प्रणाम करते हैं तो हमारा मस्तकका सम्बन्ध उनके चरणोंमें तथा चरणका सम्बन्ध धरतीसे होनेपर वहाँ जबरदस्त अर्थिंग अर्थात् दो शक्तियोंका संघात होता है अतः प्रणाम करते ही हमारे मगज शक्तिकी सक्रियता बढ़ जाती है। जिसका दिमाग पहलेसे तेज है वह और तेज हो जाता है तथा जो मन्द दिमागका है उसके दिमागमें भी नई ऊर्जाका संचार होता है। मस्तकसे चरणोंका स्पर्श कर जो दण्डवत् प्रणाम करता है वह अधिक ऊर्जा प्राप्त करता है। दोनों हाथ जोड़कर जो प्रणाम करता है वह भावुक व विनम्र होता है । एक हाथ ऊँचा कर प्रणाम करना शास्त्र निषिद्ध है। कभी भी एक हाथ ऊँचा कर प्रणाम नहीं करना चाहिए। अगर एक हाथ ऊँचा कर प्रणाम कर दिया तो वह निश्चित रूपसे पापका भागीदार हो जाता है। तथा आयु-विद्या-यश और बल आदि सब कुछ खो बैठता है। अतः मनमें पवित्र भाव रखकर, सिर झुकाकर चरणस्पर्शके साथ हाथ जोड़कर दण्डवत् प्रणाम करने वाला साधक या भक्त, सबका प्रिय, उत्तम गुण युक्त सम्पूर्ण शक्ति सम्पन्न मानव तथा समाजका कर्णधार होता है, वही सत्कर्मके लिए सबको प्रेरित करते हुए सुन्दरसाथ(सुन्दरसाथ-समाज)का निर्माण कर सकता है ।

६. प्रणामः अभिवादन

किसी श्रेष्ठ या शुभ कार्यके प्रारंभमें हम दो हाथ जोड़कर पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीकी वन्दना करते हैं । इस वन्दना या प्रार्थनासे हमारा मन पवित्र होता है। पवित्र मनसे हमारा व्यवहार सुधरता है। मानसिकता ठीक होती है। अपने इष्टदेव प्रसन्न होजानेसे हमारा हर कार्य सिद्ध हो जाता है। वन्दन शब्दका अर्थ होता है, नमस्कार और अभिवादन, हस्त संयोजन,

शिरोनमन आदि प्रणिपातको नमस्कार या प्रणाम कहते हैं । प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे किसीका गुण स्तवन करना अभिवादन कहलाता है ।

'प्रणाम' मानव हृदयकी भाव सत्ता पर आधारित प्राणोंका अभिवादन है । इसीके आँचलमें मानवीय जीवन दर्शन अपनी आँखें खोलता है । यही अभिवादन समय चक्रके असंख्य पलोंको पार कर, मानवीय सांस्कृतिक परम्पराकी कालजयी नाड़ी शक्ति बनकर शिष्टाचारके रूपमें सदा–सर्वदा अनवरत रूपसे जग–जीवनको प्राण पोषित व पल्लवित कर रहा है । यही मानव जीवनका एक मात्र सहारा है जो अनेकतामें एकताके भावोंको लिए हुए अनन्त कालसे निरन्तर असंख्य चेतनाओंको जोड़ता व सजीव करता चला आ रहा है ।

७. प्रणाम: स्वानुशासन

विनम्र, निस्पृह, निस्स्वार्थ एवं आत्म–समर्पणकी भावनासे हाथ जोड़कर किया गया प्रणाम, मानव जीवनमें स्वानुशासन प्रकट करने वाला प्रथम शिष्टाचार है । यदि मानव जीवनके दैनिक व्यवहारमें शिष्टाचार जीवित है तो उस व्यक्तिका जीवन सुशासित है । अनुशासित जीवनमें धर्म सुरक्षित होता है । अत: धर्म सुरक्षित है तो मानव जीवन भी सुरक्षित है । जो अनुशासन हीन व्यक्ति है वह भले ही वाचाल क्यों न हो, वह हमेशा मीठा ही बोलेगा इसका कोई निश्चय नहीं, बदलती परिस्थियोंमें वह कड़वी वाणी भी बोल सकता है । यदि उसने एक कटु शब्द भी बोल दिया तो जीवनमें पानी फिर जाएगा, अत: आत्म–नियंत्रण एवं स्वानुशासनके लिए 'प्रणाम' आवश्यक है । अनुशासित जीवनकी सुवास एक महकते हुए गुलाबके फूलकी तरह फैलती है । इसीलिए अनुशासित जीवनकी आधारशिला ही प्रणाम है । जितना व्यापक प्रणामका प्रयोग होगा उतना ही लोकहृदयके अन्धकार नष्ट होंगे क्योंकि 'प्रणाम' ही भाव स्रोतस्विनीकी स्निग्ध शीतल पवित्र धारा है ।

(प्रणाम प्रवाहमेसे)

धामधनी श्री कृष्ण हमारे

पद्मा के.पटेल, हिंमतनगर

सेवापूजामें निर्दिष्ट संतवाणीके अनुसार मंगलवारकी परिक्रमामें "**धामधनी श्री कृष्ण हमारे**" का गान किया हुआ है। मात्र भारतवर्षमें ही नहीं अपितु अरब, पाकिस्तान, रसिया, अमेरिका जैसे विश्वके सभी देशोंके लोग श्री कृष्णको परमात्माके रूपमें मानते हैं। विश्वके लोगोंको श्री कृष्णजीकी त्रिधालीलाके सन्दर्भमें ज्ञान न होने पर भी वे आदर पूर्वक श्री कृष्णको पूर्णब्रह्म परमात्माके रूपमें मानते हैं, जबकि श्री कृष्ण प्रणामी धर्म -निजानन्द सम्प्रदायके सुन्दरसाथ भली भाँति जानते हैं कि -हम जिन श्री कृष्णकी आराधना करते हैं वे अखण्ड परमधामवासी श्री कृष्ण हैं। वे अनादि हैं, अक्षरातीत हैं तथा सच्चिदानन्द स्वरूप हैं । यह भी जानते हैं कि इस संसारमें आकर श्री कृष्णजीने व्रज तथा रासकी लीलाएँ की। ११ वर्ष ५२ दिन तक श्री कृष्णमें अक्षरातीत श्री कृष्णकी आवेश शक्ति थी। महामतिजीने श्री कृष्णको प्राणनाथ नामसे भी पुकारा हैं। यथा,

राधाबाईनो विवाह कीधो, पण परण्या नथी प्राणनाथ।

श्रीजीने श्री कृष्णको श्याम नामसे भी सम्बोधन किया हैं। यथा, सद्गुरु मेरा श्यामजी।

अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माका नाम श्याम भी है। यथा,

अपना धनी श्री श्यामा श्याम, अपना वासा है निजधाम ॥

पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीतको ही श्रीजीने श्री कृष्ण अथवा श्री राजजी कहा है। यथा,

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, ए फल सार तणो तारतम।

अतः समग्र तारतम सारका कोई भी सार हो तो वह अखण्ड दिव्य परमधाम एवं उस परमधामके स्वामी श्री कृष्ण हैं।

श्री कृष्णको क्षर और अक्षरसे परे अनादि अक्षरातीत कहा है। वाणी एवं वीतक ग्रन्थोंमें अनेक स्थानों पर उनको पूर्णब्रह्म परमात्मा कहा है। श्री राज, श्री कृष्ण, धामधनी इत्यादि सभी नाम पूर्णब्रह्म धनीजीके लिए प्रयुक्त हैं इसलिए इस ब्रह्माण्डमें साररूप तत्त्व श्री कृष्ण तत्त्वको माना है।

कृष्ण शब्दका अर्थ आकर्षण करने वाला होता है। जिसके प्रति सर्व आत्माएँ आकर्षित होती हैं वे श्री कृष्ण हैं। शास्त्रोंमें भी जिस तत्त्वको पूर्णब्रह्म कहा है उसी तत्त्वको श्री कृष्ण कहा है। शास्त्रोंमें आत्माके तीन प्रकार माने गए हैं, जीव, ईश्वरी और ब्रह्मात्मा।

ब्रह्मात्माके लिए अक्षरातीत पूर्णब्रह्मके रूपमें आनन्द प्रदान करते हैं तथा अक्षर ब्रह्मके रूपमें ईश्वरी आत्माको आनन्द प्रदान करते हैं जबकि जीवात्माके लिए नारायण अथवा भगवान विष्णु बनकर सत्यलोकमें आनन्द प्रदान करते हैं। भगवान नारायणसे ही ब्रह्मा, विष्णु, महेशका आभिर्भाव होता है। इन्हींके द्वारा तेतीस कोटि देवी –देवताये बनते हैं। यह सम्पूर्ण आकर्षण श्री कृष्णमय है। इसलिए व्रजकी गोपियाँ श्री कृष्णके साथमें प्रेम करती थी। वास्तवमें कृष्ण गुरुत्वाकर्षण के केन्द्रबिन्दु हैं।

श्री तारतम सागरके अनुसार श्रीमद् भागवतादि पुराणोंका सार रास है जो श्री इन्द्रावतीके द्वारा प्रकाशित हुआ है। रासका सार तारतम वाणी है। तारतमका सार परमधाम एवं श्री कृष्णजी हैं। इस प्रकार यह अति स्पत है कि परमधाममें विराजमान पूर्णब्रह्म परमात्मा ही श्री कृष्णजी हैं।

राजा परीक्षित एवं शुकदेवजी मुनिके संवादका विषय उल्लेख करते हुए महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं, चौदह लोकमें वही मानव सर्वश्रेष्ठ है जिसकी बुद्धि महान है।

चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह।
मोटी मतते कहिए एम, जेहना जीवने वल्लभ श्री कृष्ण ॥
बिना श्री कृष्णजी जेती मत, सो तूं जानियो सबे कुमत ॥

जो पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण से प्रेम करता है उसीको महान्

बुद्धिका स्वामी कहा जाता है। जहाँ सुमति होती है वहाँ सुख होता है और जहाँ कुमति होती है वहाँ अपार दुःख होता है।

श्री कृष्णजीसों प्रेम करे बडी मत, सो पहुँचावे अखण्ड घर जित ॥

जो महान् बुद्धिशाली होता है वही श्री कृष्णजीसे प्रेम करेगा। उसके लिए भवसागर गोवत्सपदवत् हो जाता है। उसको ही अखण्ड सुखका अनुभव होने लगेगा। श्री कृष्णका भजन करनेसे अखण्ड परमधामकी प्राप्ति होती है।

स्वामी श्री प्राणनाथजी श्री कृष्ण महिमा वर्णन करते हुए कहते हैं,

पर तोले न आवे एकने मुख श्री कृष्ण कहन्त ।
महेराज कहे मुख ए धन, जो वली रुदे रमन्त ॥
चौदे भवन ते जीतियो, धन धन ए कुलवन्त ॥

श्री कृष्ण भजनके समान अन्य कोई सार पदार्थ नहीं है। जिसके हृदयमें श्री कृष्ण प्रेम उत्पन्न हो गया उसके लिये यह माया (चौदह लोक) कुछ भी नहीं है। ऐसे परम भक्तोंका सम्पूर्ण कुल भी धन्य हो जाता है।

"पर तोले न आवे" इस प्रकरणमें स्वामीजी बताते हैं, चाहे कोई छटादार वाणीमें कविता करे, करोडों अश्वमेध यज्ञ करे, नरमेध करे, तीर्थ अथवा धर्मक्षेत्रमें निवास करे, सिद्धिके लिए साधना करे, नित्य वेदपाठ करे, बाह्याचरण द्वारा धर्मका पालन करे, जीव दया करे, अनेक प्रकारके व्रत तथा सतीधर्मका पालन करे, साधुवेष धारण करे, अति दुष्कर तप करे तो भी श्री कृष्ण नामके बराबर ये सब नहीं आ सकते ।

महाभारतमें कहा है कि दश अश्वमेध यज्ञ करनेवाले और अनन्यभावसे कृष्णको प्रणाम करनेवालेमें से श्री कृष्णको प्रणाम करने वालेको ही अधिक पुण्य मिलेगा क्योंकि दश अश्वमेध यज्ञ करने वालेको पुण्य क्षीण होने पर पुनः संसारमें जन्म लेना पडता है किन्तु "**कृष्ण प्रणामी न पुनर्भवाय**" श्री कृष्णको प्रणाम करने वाले फिर इस

भवसागरमें नहीं आते हैं । श्री प्राणनाथजी श्री कृष्ण जन्म वधाई गाते हुए किरन्तनमें कहते हैं कि ,

ए लीला अखण्ड थई, एहनो आगल थासे विस्तार ।
ए प्रगट्या पूरण पारब्रह्म, महामति तणो आधार ॥

यदि स्वामी श्री प्राणनाथजीके सम्पूर्ण आधार (सर्वश्व) श्री कृष्ण हैं तो सम्पूर्ण सुन्दरसाथजीके आधार (सर्वश्व) भी श्री कृष्ण ही हैं, इसमें कोई संशय नहीं है ।

चौबीस अवतारोंमेंसे श्री कृष्ण, बुद्ध तथा कल्की अवतारोंको प्रमुख माना गया है। जिसने व्रज और रासकी लीला की वे श्री कृष्ण तो अवतारोंमें भी श्रेष्ठ कहे गए हैं ।

अवतार एक श्री कृष्णनो, मूल मथुरा प्रकट्या जेह ॥

भगवान विष्णु मथुराके कारागृहमें चतुर्भुज रूपमें प्रकट होकर वसुदेव, देवकीको दर्शन देकर वैकुण्ठ चले जाते हैं । तत्पश्चात् –

दोय भुजा स्वरूप जो श्याम, आतम अक्षर जोस धनी धाम ।

दो भुजा वाले श्री कृष्ण, जिसके अन्दर अक्षरकी आत्मा एवं धामधनी अक्षरातीत श्री कृष्णका जोश था, वे प्रकट होगए ।

कृष्ण नहीं अवतारी साधो, कृष्ण नहीं अवतारी ।

संत कृष्णदासजीने कहा है,

कृष्ण कृष्ण मुख रटहूं रात दिन, श्वास ही श्वास पुकारो ।

जिस देही प्रभु पुरण मिली है, सोई जनम तुम्हारो ॥

संक्षेपमें कहें तो –परमधाममें जो पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं उनके ही ना श्री राज, श्री श्याम श्री कृष्ण इत्यादि हैं । तारतम मंत्रमें भी निजनाम श्री कृष्णजी अनादि अक्षरातीत कहा है। प्रणामी सुन्दरसाथ स्वयंको परमधामकी ब्रह्मात्मा मानते हैं और अपने धनी अनादि अक्षरातीत श्री कृष्णका अनन्यभावसे भक्ति करते हैं, जो सदा दिव्य लीलामें ही निमग्न रहते हैं। उन्हींको “**धाम धनी श्री कृष्ण हमारे**” कहा हैं ।

॥ प्रणाम ॥

हारिए न हिम्मत

जीवनमें धूप–छांवकी तरह अनेक रंग देखनेको मिलते हैं। कभी अथाह प्यार, कभी ईर्षा–द्वेष कभी सम्मान तो कभी अपमान भी। कोई भी नहीं बच पाता इन स्थितियोंसे, चाहे वह महान ज्ञानी हो अथवा महामूर्ख, निर्धन हो या धनवान, निर्बल हो या शक्तिशाली।

प्राय: देखा गया है कि जो प्रगतिशील हैं, भावुक हैं, हितैषी हैं परोपकारी हैं उन्हें अच्छा कहने वालोंके साथ–साथ निंदा करने वाले भी कम नहीं होते हैं। क्योंकि पारस्परिक ईर्षा–द्वेष और निंदा करना कुछ बुरी प्रवृत्तिके लोगोंका काम होता है। दूसरोंकी उन्नति देख दुष्प्रवृत्तिके लोग दुखी होने लगते हैं। तरह तरहके रोड़े भी अटकाते हैं। खुद कुछ नहीं कर पाते तो दूसरोंकी निंदा, चुगली, बुराई करना शुरु कर देते हैं। किन्तु उसका असर यदि आप पर पड़ने लगे तो निश्चित ही आपकी उन्नति–प्रगति प्रभावित होगी। इसीलिए आदत डालिए इस तरहकी निंदा, अपवादों, चुगली, रोडोंको पचा सकनेकी। आप सहनशील बनें, कबीरजी तो यहाँ तक कहते हैं,

निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुहाय॥

निंदककी निंदासे यह जान सकते हैं कि आपमें क्या कमी है। कहाँ कमी है आदि। अत: प्रयास करके उन कमियोंको दूर भी करें तथा अपना मानसिक संतुलन बनाये रखें। अपनेको तटस्थ बनायें। अपने आपको इस तरह अलग कर लें कि मानों निंदा आपकी नहीं किन्तु किसी दूसरेकी हो रही है। आप उसके साक्षी मात्र हैं। निराधार निन्दाको सहना, बिना किसी क्षोभ प्रतिक्रियाके उसे पचाना शिवकी तरह गरल पीना ही है। परन्तु ऐसा तभी संभव है, जब आप पूर्णत: सहिष्णु बन जाएँ।

बहुतसे लोग जारा–सी विपत्ति, दु:ख, रोग, निन्दासे घबरा जाते हैं। उनका मानसिक संतुलन भी बिगड़ने लगता है। यह भावुकताका दुर्गुण है।

इसके कारण कई लोगोंकी उन्नति पर असर पड़ता है। कई लोग प्राण तक गवाँ देते हैं। जैसे राजा दशरथने पुत्र वियोगके दुःखके कारण ही प्राण त्याग दिए, वह अपने मनको मजबुत न बना पाए, वे मानसिक आघात सहन नहीं कर पाये। परन्तु माता कौशल्या अधिक सहिष्णु थी। स्त्रियाँ वैसे भी ज्यादा भावुक, कोमलहृदया मानी जाती है। उस पर भी मां।

महाकवि कीट्स वैसे तो बहुत ज्ञानी थे किन्तु व्यावहारिक नहीं थे। उन्होंने एक दिन दैनिक समाचारमें अपने खिलाफ एक आलोचनात्मक लेख पढ़ा। जिसमें उन्हें नीचा दिखानेके लिए एवं बदनाम करनेके लिए निराधार आरोप लगाए थे। २७ वर्षीय कीट्सको इससे भयंकर मानसिक आघात पहुँचा और उनकी मृत्यु हो गई।

केवल ज्ञान होनेसे काम नहीं होगा। उसको व्यवहारमें उतारना जरूरी है। इसके लिए सत्य मार्ग पर चलना अति आवश्यक है। ऋग्वेदमें कहा है, सत्कर्मोंमें विघ्न उत्पन्न करने वाले दुष्टोंका बहिष्कार करें। परमात्मासे प्रार्थना करें, हे प्रभु ! हमारे दुर्गुण दूर करें और मनमें शक्तिका संचार कर दें।

विशेष सूचना

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका' के सम्पूर्ण सदस्य एवं पाठकोंको सूचित किया जाता है कि जिनका वार्षिक शुल्क पूर्ण हो गया है और "Renew" से शुरु हो गया है तो कृपया पत्रिका पुनः प्राप्त करनेके लिए ग्राहक नम्बरके (PGY, PGL, PHY, PHL, PFL) साथ आप पत्रिका कार्यालय, श्री ५ नवतनपुरी धाममें मनीऑडर भेज दें। अधिक जानकारीके लिए फोन पर सम्पर्क करें।

कुणाल व्यास ०८३४७४९७४७४ अथवा ०९३७४१२२२२८

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर जुईका वार्षिक उत्सव

जुई (भिवानी) हरियाणा : श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके वयोवृद्ध सन्त श्री राधिकादासजी महाराजने गुरुजी श्री मंगलदासजी महाराजसे मन्त्र दीक्षा प्राप्त कर अपने पैत्रिक गृहपर ही मन्दिरका निर्माण किया और सम्पूर्ण सम्पत्ति धर्ममें लगाई । हरियाणामें जुईको केन्द्र बनाकर अनेक स्थानोंमें जागनीका कार्य किया। श्री राधिकादासजी महाराज, श्री सदानन्दजी महाराज तथा कुछ साध्वी माताओंकी जन्मस्थली जुई है। श्री राधिकादासजी महाराजने पार्श्ववर्ती मकान खरीदकर जुईके मन्दिरका पुननिर्माण किया और अनेक सुविधायें बढ़ाई । नवनिर्मित मन्दिरमें दिनांक २८ अक्तूबर २०११ को सेवा पूजा पधरायी गई और श्री तारतम सागरके १०८ पारायण आरम्भ हुए । इस अवसर श्री ५ नवतनपुरी धामसे श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज, श्री ५ महामंगलपुरी धामसे आचार्य श्री १०८ सूर्यनारायणदासजी महाराज, बाबा दयाराम धामसे आचार्य श्री जगतराजजी महाराज, शक्तिनगर दिल्लीसे श्री लालदासजी महाराज, मलिहाबादसे श्री ब्रह्मज्योतिजी महाराज, कालिम्पोंगसे श्री मोहन प्रियाचार्यजी महाराज, भरोड़ासे श्री टहलकिशोरजी महाराज, चण्डीगढ़से श्री श्यामानन्दजी महाराज सहित अनेक सन्तजन, विद्वान तथा समाजके अग्रणी उपस्थित हुए थे ।

चण्डीगढमें श्री तारतम सागरके १०८ पारायण

भारतके सुन्दर शहरोंमेंसे अन्यतम शहर चण्डीगढ़में श्री श्यामानन्दजी महाराजके नेतृत्वमें श्री कृष्ण प्रणामी निजदरबार(मन्दिर)की स्थापना हुई है । उसके ग्यारहवें वार्षिक उत्सव पर श्री तारतम सागरके १०८ साप्ताहिक पारायण एवं श्रीमद्भागवत कथाका आयोजन हुआ । श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजने, स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज, श्री जगतराजजी महाराज, श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज, श्री उदयशंकर त्रिपाठी, श्री रूपराज शर्मा आदि सन्तमनीषी एवं विद्वाननोंके साथमें कार्यक्रमका शुभारंभ किया। सप्ताहव्यापी इस कार्यक्रममें अनेक सन्तमनीषियोंने आशीर्वचन प्रदान किए ।

सुन्दरसाथ-परिवार

पारिवारिक सम्बन्धसे भी धर्मका सम्बन्ध बड़ा होता है। सुन्दरसाथ-परिवार स्वयंको परमधामसे सम्बन्धित मानते हैं और अपने जीवनमें भी इसे उतारनेका प्रयत्न करते हैं। इस बार फाजिलका एवं मुक्तसर(पंजाब)के सुन्दरसाथने इसे चरितार्थ कर दिखाया। घटना ऐसी थी, कच्छ-भूजसे दो बस सुन्दरसाथ चण्डीगढ़के कार्यक्रममें सम्मिलित होनेके लिए जा रहे थे। दिनांक ६-११-२०११ को प्रातः ५.३० बजे एक बस दुर्घटना ग्रस्त हो गई जिसमें सात व्यक्तियोंका स्थल पर ही धामगमन हुआ। शेष २८ व्यक्ति घायल हुए। उनमें अधिक घायल १२ व्यक्तियोंको फरीदकोट मेडिकल कॉलेजमें भर्ती किया। शेष घायलोंको फाजिलका एवं मुक्तसरमें उपचार करवाया। दो घायलोंको एयर एम्बूलेंस द्वारा अहमदाबाद भेजा गया। शेष सभीको मुक्तसर स्थानान्तरित कर उपचार करवाया।

इस घटना पर फाजिलका एवं मुक्तसरके सुन्दरसाथने इतनी सेवायें की जिसका वर्णन नहीं हो सकता है। इनकी सेवाको देखकर घायल सुन्दरसाथकी आँखे भी अश्रुओंसे छलक उठी थी। वे अपनी शारीरिक पीड़ासे नहीं अपितु सुन्दरसाथकी सेवा भावको देखकर अश्रुधारा बहा रहे थे और कह रहे थे कि इतनी सेवा तो हमारे परिवारके लोग भी नहीं कर पाते होंगे।

सुन्दरसाथ परमधामका परिवार है। ऐसी पवित्र भावनावाले सुन्दरसाथ ही ऐसी सेवा कर सकते हैं। उनके लिए धन्यवाद, साधुवाद जैसे शब्द छोटे पड़ते हैं। श्री राजजी उन्हें अपनी आन्तरिक कृपा एवं प्रेम प्रदान करें यही प्रार्थना करते हैं। इन सुन्दरसाथमें श्री फाजिलकाके श्री कमल घुडिया, श्री शगनलाल सेतिया, विमल सेतिया तथा मुक्तसरके श्री अनिल परनामी, विट्टू परनामी आदि मुख्ये हैं। ऐसे अनेक नामी अनामी सुन्दरसाथ हैं जिन्होंने बड़ी सेवा की हैं किन्तु जिनके साथ निरन्तर बात होती रहती थी उनका ही नाम याद रहनेसे यहाँपर उल्लेख किया गया है इसलिए इसे अन्यथा न समझें। सच्चे सुन्दरसाथकी सच्ची भावना देखकर हर किसीका हृदय गद्‌गद हो जाता है।

पृथ्वी परिक्रमा

कार्तिकी पूर्णिमा पृथ्वी परिक्रमाके लिए प्रसिद्ध है। श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना इसी दिन हुई थी। १२००० पारायणका स्मृति दिन यही माना जाता है। इसबार यह पवित्र दिन १०-११-२०११ को था। उस दिन प्रातःकालीन पूजाके पश्चात् ६.३० बजे पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं सन्तों सहित सैकडौ सुन्दरसाथने श्री ५ नवतनपुरी धामसे मूलमिलावाकी पैदलयात्रा की। मूलमिलावामें श्री मेहेर सागरके १२०० पाठ एवं पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वचन हुए। तत्पश्चात् अल्पहार लेकर सभी जन लौट गए। इस प्रकार श्री ५ नवतनपुरी धामसे मूलमिलावा होते हुए श्री ५ नवतनपुरी धाम लौट कर पृथ्वी परिक्रमा की गई।

इस अवसर पर चिखोद्रा(आणंद) से ३६० किलोमीटर की पैदल यात्रा कर आए हुए यात्रियोंने विशेष शोभा बढ़ाई। पूज्य आचार्य महाराजश्रीने सभीको आशीर्वाद दिए।

स्तुति

प्रभु अब ज्ञानकी बंशी बजा देते तो अच्छा था।
बजाई रासमें जैसी बजा देते तो अच्छा था॥

गोपियाँ तन छोड़ कर चली प्रीतम से मिलनको।
हमें भी नाथ वैसे ही बुला लेते तो अच्छा था॥

लिया है माग कर हमने बुरा जो ख्वाबका बुरका।
अगर इस ख्वाबसे हमको बुला लेते तो अच्छा था॥

नहीं है चाह अब हमको प्रभु नाबूद दुनियाँ की।
गले से जो सदानन्द लगे लेते तो अच्छा था॥

प्रभु अब ज्ञानकी..............

धर्म प्रचारकोंकी शिबिर
(२७ से ३१ दिसम्बर २०११)

वर्तमान समयके सभी धर्मप्रचारकोंको सूचित किया जाता है कि आगामी २७ से ३१ दिसम्बर २०११ पर्यन्त श्री ५ नवतनपुरी धाममें एक शिबिरका आयोजन किया गया है ।

इस अवसर पर श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके सिद्धान्त, प्रचार-प्रसारकी रीति, प्रचार-प्रसारमें आ रहे व्यवधान तथा उनके निवारणके उपाय इन विषयों पर विशद चर्चा-परिचर्चा, सम्वाद-परिसम्वाद एवं मार्गदर्शनका कार्यक्रम होगा ।

आप सभी सन्तों-प्रचारकोंसे अनुरोध है कि कृपया अपने आगमनकी सूचना पुजारीश्री यमनाथजी शास्त्री (मो. ०९८९८०१६६७७)को देकर अपना नाम अंकित करायें जिससे व्यवस्थामें सुविधा रहेगी ।

- सन्तसभा

श्री ५ नवतनपुरी धाम गौशालाकी सेवा

एक गायकी सेवा(गौदान) रु. ११०००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी इस प्रकार हैं :

श्री मनीषभाई पुरुषोत्तमभाई, राजकोट ।

श्री जमनादासभाई पुरुषोत्तमदास ठक्कर (भद्रेश्वरवाले),मुम्बई ।

श्री जूठाभाई पाँचाभाई अमरेलिया, जामनगर ।

श्रीमती ममताबेन विनयभाई कापडिया, यु.एस.ए. ।

श्रीमती कंचनबेन अरविन्दभाई कापडिया(गणदेवीवाले), यु.एस. ए. ।

गं. स्व. नन्दुबेन भगवानजीभाई पटोरिया, राजकोट ।

श्री नगेन्द्रमणि चन्द्र आचार्य, सरिता, अमिता, उमा, नीता तथा समस्त परिवार, काठमाडौं(नेपाल) ।

गायोंके घास, चारा, कपासिया, लड्डु दाना एवं अन्य सेवा प्रदान करनेवाले सुंदरसाथजी इस प्रकार हैं :

रु. ६०००/ धामवासी रामजीभाई हरजीभाई पुरोहित, जाम खम्भालिया ।

रु. ५०००/ श्री कान्तिलाल करमशीभाई पटेल, नवसारी ।

रु. २५००/ धामवासी पोपटलाल नारणभाई टांक, सिनुग्रा(कच्छ) ।

रु. २५००/ धामवासी जमनाबेन अरजणभाई ठेसिया, कालावड ।

रु. २५००/ श्री नवीनभाई भगवानजीभाई वसोया, अहमदाबाद ।

रु. २५००/ श्री भरतभाई पुंजाभाई पटेल, पिलद्रा(साबरकाठा) ।

रु. २५००/ श्री भरतभाई पटेल तथा श्री मनसुखभाई पटेल, देवपर(कच्छ) ।

रु. २१००/ धामवासी श्री मोहनदास सापकोटा, आसाम ।

(ह. दिलप्रसाद सापकोटा, श्री ५ नवतनपुरी धाम)

गौदान तथा गौसेवामें घास-चारा आदिकी सेवा प्रदान करनेवाले सभी सुन्दरसाथको श्री राजजीकी असीम कृपा तथा गौमाताके आशीर्वाद प्राप्त हो और आप इसी प्रकारकी सेवायें करते रहें ऐसी शुभकामनाओंके साथ श्री ५ नवतनपुरी धाम तथा पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी ओरसे हार्दिक शुभकामनाएँ एवं शुभाशीर्वाद ।

सुन्दरसाथजी गौदान एवं गायोंकी सेवाका बड़ा महत्त्व होता है इससे अनेक अनिष्ट दूर होते हैं । कोई भी सुन्दरसाथ अपने पूर्वजोंकी पुण्यतिथि पर, अपने तथा अपने परिवारजनोंके जन्मदिन पर गौदान कर सकतें हैं । गायोंकी सेवामें घास-चारा तथा खाद्य आहार प्रदान करना भी बड़ा ही मंगलमय होता है । गायोंकी सेवासे भी विभिन्न रोग दूर हो सकते हैं ।

श्री ५ नवतनपुरी धामकी विभिन्न सेवायें

५००१/-	दवाखानाकी सेवा	(मासिक)
२५०१/-	गौशालाकी सेवा	(दैनिक)
१७०१/-	सादी रसोईकी सेवा	(उत्सव सिवाय, दैनिक)
११००/-	गोटा पारायणकी सेवा	(दैनिक)
७५१/-	पारायणकी सेवा	(साप्ताहिक)
५०१/-	अखंड दीपककी सेवा	(मासिक)
५०१/-	राजभोग(थालभोग)की सेवा	(दैनिक)
२५१/-	धूप अगरबत्तीकी सेवा	(मासिक)
२०१/-	पाँच आरती माटे घीकी सेवा	(मासिक)
२०१/-	बालभोगकी सेवा	(दैनिक)

साहित्य सेवा

असम : रांगसाली निवासी श्री भीम रीजाल तथा चौधरी रीजालके पिता पण्डित श्री हरिभक्तजी रीजाल (उमर ८८)का १२/८/२०११ चतुर्दशी शुक्रवार सायं ३ बजे धामगमन हो गया है। उनकी आत्माकी शान्तिके लिए पुत्रोंने मन्दिरमें भोग आरती किया और पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु. २५१/ भेट अर्पण किया है। पण्डित श्री हरिभक्तजीने श्री ५ नवतनपुरी धाममें सेवा करते हुए श्री तारतम वाणीकी शिक्षा पूरी की और कर उन्होंने गाउँ गाउँ जाकर धर्मका प्रचार-प्रसार किया।

धामवासी आत्माको श्री राजजी सदैव अपने चरणाश्रय प्रदान करें ऐसी प्रार्थना है। **प्रेषक - सनत धीमाल**

पक्की रसोईकी सेवा

०१) धा.वा. यशकुमार मुकेशभाई मारकणा हरिपर
०२) धा.वा. सौभाग्यलाल प्रेमजीभाई चौहाण ह. केशुभाई उमेशभाई सिनोग्रा
०३) श्री हसुभाई देवजीभाई दुधागरा (मजोठवाला) राजकोट
०४) श्री हरिशंकर श्रेष्ठ काठमाडौं(नेपाल)
०५) धा.वा. धनजीभाई वीरजीभाई संघाणी जामनगर
०६) श्री जगदीशभाई कान्तिलाल पीठडिया जामनगर
०७) श्रीमती दमयन्तीबहेन वालजीभाई व्यास जूनागढ
०८) श्री गोरधनभाई सवजीभाई अजुडिया हरिपर
०९) चि. आँचल नीरजभाई पटेल ह. कुन्दनबहेन निकोडा
१०) श्री हसमुखभाई मूलजीभाई भण्डेरी मजोठ
११) धा.वा. मोहनभाई डायाभाई गोण्डलिया अमृतपुर
हस्ते. परबतभाई तथा गोविन्दभाई कान्तिभाई तथा सनतभाई गोण्डलिया
१२) धा.वा. पातलीबा मोहनभाई गोविन्दभाई गोण्डलिया अमृतपुर
हस्ते : पर्वतभाई, गोविन्दभाई, कान्तिलालभाई सनतभाई गोण्डलिया
१३) श्रीमती केशीबहेन खुशालभाई वजाभाई पण्डया खेडब्रह्मा
१४) श्रीमती कोकिलाबहेन जी. भावसार पालडी
१५) श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र बोरीवली सुन्दरसाथ (बोरीवली)मुम्बई
१६) श्री विठ्ठलभाई छगनभाई कपोपरा हिपावडली(सुरत)
१७) श्री हितेशभाई विनुभाई मकाणी चाडिया
१८) श्री दीपकभाई साडीवाला खम्भात
१९) श्रीमती नेहलबहेन अमितकुमार पटेल अहमदावाद(नरोडा)
हस्ते : अरविन्दभाई शम्भुभाई भण्डेरी
२०) श्री दुर्लभभाई वालाजीभाई गोण्डलिया सुरत
२१) श्री माधाभाई भुराभाई कारसरीया खेंगारपुर
हस्ते : दामजीभाई माधाभाई कारसरीया
२२) श्रीमती रीटाबेन अनिलकुमार भावसार धोलीकूवा(नवसारी)
२३) श्री मनसुखभाई भोजाभाई अटाला हर्षदपुर

मुम्बईमें श्री नरेन्द्रभाई चत्रभुज जीवनपुत्रा, गीताबेन नरेन्द्रभाई जीवनपुत्रा परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद्‌भागवत कथा, आशीर्वचन प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री तथा कथाकार श्री चन्दन शास्त्री ।

धर्मगुरुजीका धामगमन

धर्मगुरु पं. श्री चेतनदत्तजी शर्मा(श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना)का धामगमन दिनांक १३.१०.२०११ को हुआ । वे शतायु हो गए थे । उनका जीवन बाल्यकालसे ही धर्मके प्रति समर्पित था । श्री ५ पद्मावतीपुरी धामके वे अद्वितीय विद्वान थे । आज उनके जाने पर एक नैष्ठिक विद्वानकी कमी अनुभव की जा रही है । विधिके विधानको टाला नहीं जा सकता है । दिनांक १४-१०-२०११ को श्री ५ नवतनपुरी धाममें एवं दिनांक १५-१०-२०११ को श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, मुम्बईमें उनको श्रद्धाञ्जली प्रदान की गई । दिनांक २४-१०-२०११ को श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम, पन्नामें श्रद्धाञ्जली सभाका आयोजन कर उन्हें श्रद्धाञ्जली प्रदान की गई ।

RNI No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

श्री ५ नवतनपुरी धाम स्थापना दिन कार्तिकी पूर्णिमाके अवसर पर श्री नवतनपुरी धामसे मूल मिलावाकी पद यात्रा, मेहेर सागर पाठ एवं आशीर्वचन प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री ।

चिखोद्रा(आनन्द)से ३६० कि.मी.की पद यात्रा कर श्री ५ नवतनपुरी धाम पहुंचे हुए सुन्दरसाथ ।

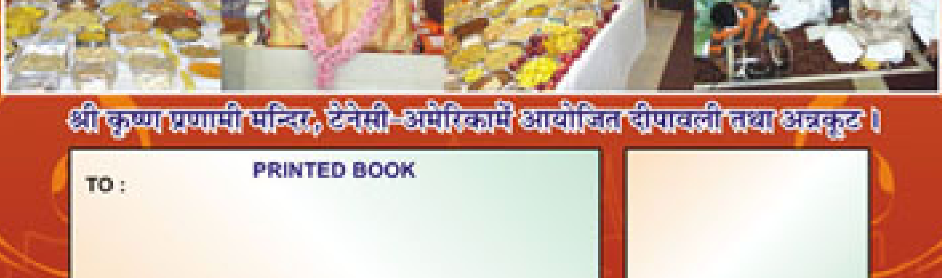

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, टेनेसी-अमेरिकामें आयोजित दीपावली तथा अन्नकूट ।

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)